Name - [illegible]
class - B.A III year
Deptt - Samskrit

अनुष्टुप छन्द

लक्षण :— पादे षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्
द्विचतुष्पादयो र्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

यह छन्द एक मानक छन्द माना जाता यह एक वार्णिक छन्द है जिसमें प्रत्येक चरण में 8 वर्ण होते हैं। सर्वप्रथम अनुष्टुप छन्द ही प्रयोग आर्ष काव्यों में किया गया। रामायण, महाभारत आदि।

जो इस छन्द के चारों चरणों में पाँचवाँ वर्ण लघु (ह्रस्व), छठवाँ अक्षर गुरु (दीर्घ) होता है, पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण दीर्घ (गुरु), तथा दूसरे एवं चौथे चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) होते हैं। इस छन्द को पद्य या श्लोक भी कहते हैं। पदान्त यति होती है।

(1) उदा० — मा निषाद प्रतिष्ठां त्वम् अगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्

2 उदा० (1) — शैले शैले न माणिक्यं
    न = I, मा = S, णि = S

6 - 1/3 (7) - दीर्घ
5 - 2/4 (7) - लघु

(2) मौक्तिकं न गजे गजे।
    ग = I, जे = S, ग = I

(3) साधवो नहि सर्वत्र
    हि = I, सर्व = S S

(4) चन्दनं न वने वने ॥
    व = I, ने = S, व = I